

श्रीगणेशायनमो ॥ ॥ ततो वलितो हो पूजायात वने ॥ लखन द्वा
पः ततो कुलमाटं दमादा शैव पूजा ॥ केव वी य ॥ वदं सि
धुजर्जं म का खान क्काय अयादि गुरु न स्कार ॥ न्यास ॥ ॐ ह्रीं
कनि ह काय नम ॥ ॐ आदि कर अर्ग न्यास ॥ जल पात्र अथ
पात्र चरु हृदि आ म पूजा ॥ सर्वता न आ वाहन ॥ आधान स
क नम ट ॥ ॐ ह्रास्य तपसा समा यनम ॥ ध्यान ॥ धवना नो ज
मदा र्चं म क व न त्रि लो व न ॥ पुन ड क म हा ते ज र त म द र

म ध्य गं ॥ अस्या स न पु त र्छ तं ज वा ना ज्य कर दृ य ॥ य का र्थं चि
त ये भा नु दि न्नु ज न क वा स न ॥ ॐ ति ध्या न ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं स रू र्था
य नमो ॥ नम ॥ अह द ल पू ज न ॥ ॐ सौं ह्रीं सौं सौं सौं मा य नमो ॥ ॐ
क्रीं क्रीं क्रीं स र्ज गा ना य नम ॥ ॐ वीं वीं वीं स र्ज वा य नम ॥ ॐ जीं जीं
जीं स र्ज रू स्या त नम ॥ ॐ दीं दीं दीं स र्ज का य नम ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं
स र्ज मि त्र ना य नम ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं स ना दू व नम ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं
स के तु वे नम ॥ म र्च ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं सा हा मा त द से न वा य पु का स

अकिं सदिताय नमः ॥ त्रिधा ॥ षट्दंग ॥ वलि ॥ त्वाकसदा वलि
नष्ट के ॥ रूपदीपने इवेद्य जाप ॥ १० ॥ स्तोत्र जवा
कुसुमसंकासं कास्ययुमदाद्युति ॥ तमानि सर्वपापह
नं पुमांसि दिवाकर ॥ वनीकं वीजमद्यस्केत्यादि ॥ जे तर्ग आदि
तर्पण ॥ वलि धोय ॥ इति कुलमात्रदयुजो ॥ ततो वलि नोदुष्य
जा ॥ सिधुन अदुवचु पोछाव बोध ॥ लेखन दायवेतसि धुज ज
मका स्थान दाय ॥ गुरु नमस्का नादि आस ॥ वें असी यफ्ट ॥ ७

वंपुका ने नकर अंग आस ॥ जे नयात्र अर्थ पात्र नूत नूदि आस
जा ॥ सवर्ती न आवाहन ॥ त्रिदेवः त्रियाजलि ॥ नैय दौ दौ दौ दौ
दौ दौ त्रपाराय पादुकी ॥ आस्तु स्वा नान्नय नमः ॥ ध्यान ॥ कसुका
कसुका संन्यस्य वववतुर्भुज ॥ उदके सोमादादु होरक कान्ताय
त्रिलोचन ॥ सखमा लागने वदा नू लेखन वद दितो ॥ काद्यरेटक
वामेव सर्वो भरण मदित ॥ अक ये सादु ॥ सर्वो द्वारे दने पय जयट ॥
पांन के के दि कामय गवष्टु या दि निव यट ॥ ददनी वमदा सिद्धि

ASMA ARCHIVES

1.765

FILE # 11011

ASIAN ARCHIVES

1.765

PALESTINE NO. 11

म न सा वत्स मी ह ते ॥ इति ध्या न ॥ त मे का टा ये न म ॥ वि क टा ये न म ॥ कु टि
ला न ला ये न म ॥ नु क पा त ला ये न म ॥ वी न मा ता ये न म ॥ हू वि ना ये न म ॥
ख म न्ये न म ॥ पु सि न्ये न म ॥ ख ला ये न म ॥ दुं दु ह ये न म ॥ वि दा ये न
म ॥ पु र्ज गा ये न म ॥ इति द्वाद स ग ॥ त तो म न्ये ॥ त्रै प थो क टा द्वा प द न
कि दे वी मा दा द्वा द त्र पा न्ना य प उ का ॥ त्रि धा र्ष द न्द व लि आ वा ज्य ॥
त र्ज ना मू दा ॥ व लि ॥ अ ज ना दि ॥ धूप दी प न वे द्य ॥ जा प थो खा दा १० ॥
त्रौ त्र ॥ वं दे स दा त्ता दि ॥ अ त्र ग न्धा दि ॥ ट र्प ण ॥ नु का ने क ॥ अ न्ये र्घ ॥

व लि थो य ॥ इति द्वा त्र पा न्ना य ॥ आ वा द आ वा न म कि प त्या दि ॥ मू ज
स्ना ये न म ॥ ध्या न ॥ ख र्वा लि न्यो द रि स र्क कं पि र कु ग न्ना न नौ ॥ द रु पा ज्म
कु स व रं व न द य त्रि र्वं न म ॥ त्रि दे व ॥ त्रै प थो गौ गौ गौ गौ श्री कु ल ग रो ज्म
ये पा दु का ॥ त्रि धा र्ष द न्द व लि आ वा ज्य ॥ ग न्ना मू दा ॥ धूप दी प न वे द्य ॥ जा
पा ॥ गो खा दा १० ॥ त्रौ त्र ॥ अ त्र ग न्धा दि ॥ इति ग रो स पृ ज्म ॥ त तो द्वा त्र प
ज्म ॥ गु रू न मू क्ता ॥ न्या स ॥ स अ म्नु य प र ॥ इत्या दि कर अं ग न्या स ॥ अ
न्य प त्र अ र्घ पा त्र भू त पु दि ॥ आ म पृ ज्म ॥ त्रि दे व ॥ त्रै प र्थ नै नं दि न्य न म ॥

दक्ष॥ त्रुपमं माहा कालाये नमः॥ दामे॥ श्रीये नमः॥ लक्ष्मीये नमः॥ त्रु
देहलये नमः॥ एतं यास॥ वक्रा न्यादि कृत्वा॥ त्रिया जालि सत्र मूल॥
एतं वि लि आवा ज्य॥ तजनी मूला॥ धुपदीये नै वेद्य॥ जाय॥ त्र
त्रा॥ वदे सदा त्यादि॥ अत्र गथादि॥ वलि विस्तर्जना॥ इति दाल कृत्वा॥
ततो रे वक्र कृत्वा॥ न्यासा॥ नमः साय फर॥ नृवैयु काने रा कर अं म न्या
स॥ जल पात्र अर्घ्य पात्र नूतनूदि आत्म कृत्वा॥ आशि॥ अश्व स
ना ये नमः॥ ध्यान॥ वा म हू से न व गृहा क वा निर्ण द दिने राय॥ एव म

गन्धर्व मारु हू दि हू से माति हू दरा॥ यव ध्यात्वा व मन सारे वक्रं सजये हू वी॥
इति ध्यान॥ कुं कुं कुं कुं नृवैयु काने माहा नै र वाय त म॥ त्रिचारु ड म वलि
देव या ज व स॥ वा म हू दाने म॥ ज व पा ए व स सत्र मा हा का ले॥ हू नू
मकं॥ ध्व ते पां थ व २ मकं त्रि पां जलि॥ वलिं आवा ज्य चे नृ पो नि मू दा॥ धुप
दिय नै वेद्य॥ जाय॥ त्रि र हू र्य हू त्र मा हा भागे हू या दू द य न न्द न॥ तु नै
ग कुरु ते सा ग रे वक्रं य न मो नमः॥ अत्र नग थादि वा क्य न स ह॥ इति नै व
कं कृत्वा विधि॥ ते ले दार हू थु पि कृत्वा॥ विधि थ॥ का द्य विद्या निरु